गरीबन बाबा

अनजान-सुनजानमे भेल अपराधसँ देवीक कोप आ भक्तक अमरता

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : तीन संगी

कमला कातक उधरा गाममे तीनटा संगी रहथि — बरहम ठाकुर ब्राह्मण, घासी यादव आ गरीबन धोबि। पहिने गामे-गामे अखराहा रहए, आ ओतय ई तीनू संगी कुश्ती लड़थि, पहलमानी करथि।

ई गाथा एकटा अनजान-सुनजानमे भेल भूलक थिक, जकर परिणाम अकल्पनीय भेल — एकटा साधारण दैनिक क्रियामे अनायास भेल गलतीसँ देवीक कोप, आ अन्ततः भक्तिक शक्तिसँ अमरता प्राप्तिक कथा।

अध्याय १ : अनजान-सुनजानमे भूल

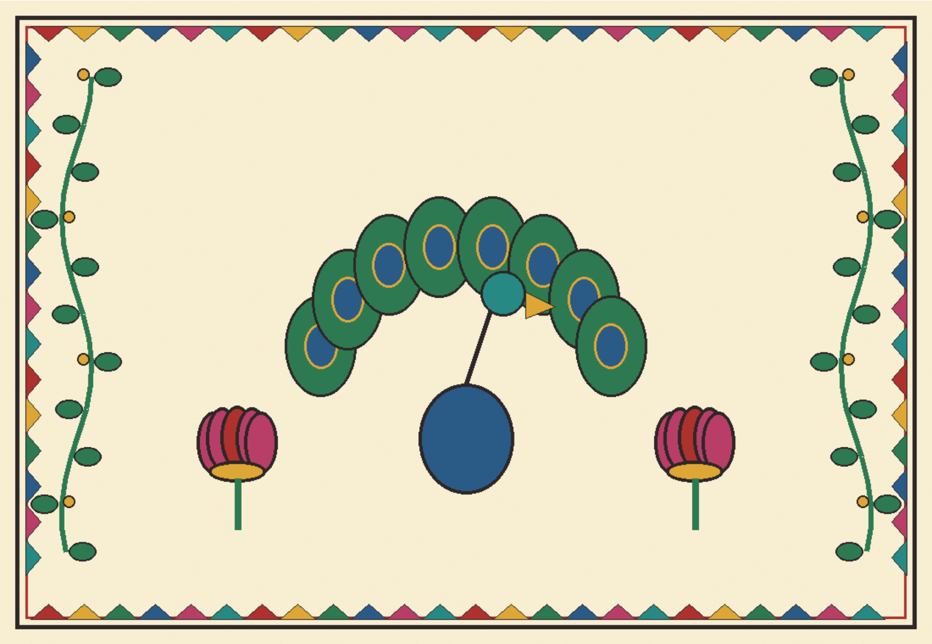

चित्र 1

उधरा गामक अखराहा लग कमला माइक पीड़ी पूजा-स्थल/चबूतरा छल — पवित्र, सम्मानित स्थान, जतय गामक लोक श्रद्धासँ पूजा करैत छला।

एक बेर, कुश्ती वा दैनिक अभ्यासक बीच, गरीबनक पएर अनजान-सुनजान ओहि पवित्र पीड़ीमे लागि गेलनि — कोनो जानबूझि कऽ कएल अपराध नहि, मात्र एकटा अनजान-सुनजान भेल स्पर्श।

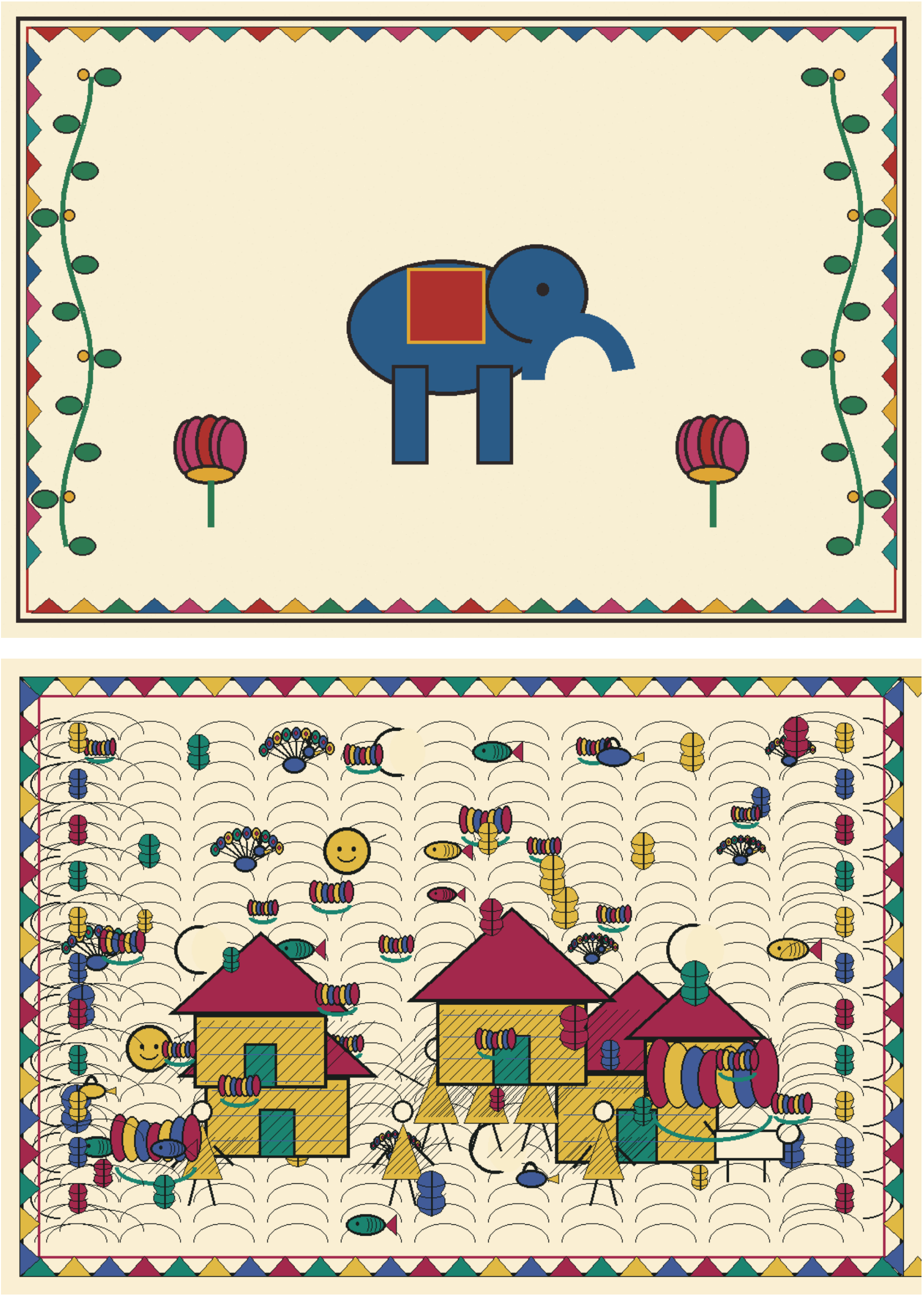

चित्र 2

मुदा ई अनजान-सुनजानमे भेल भूल कमला मैय्याकेँ तमसा देलक! देवीक क्रोध अत्यन्त गम्भीर छल — भलहिं गरीबनक कोनो दुर्भावना नहि छल, मुदा पवित्र स्थानक अपमान क्षम्य नहि मानल गेल।

क्रोधित कमला मैय्या इन्द्रक दरबारसँ एकटा बाघिन अनलनि — दण्ड देबाक लेल एकटा शक्तिशाली, भयंकर साधन। ई निर्णय गरीबनक भाग्यमे एकटा भयावह मोड़ आनलक।

अध्याय २ : बाघिनसँ युद्ध

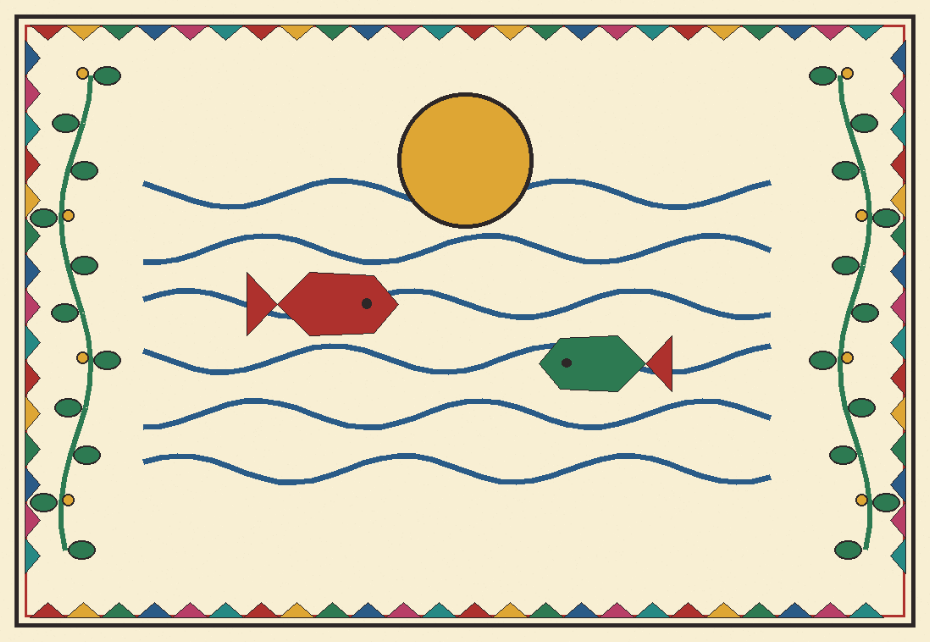

चित्र 3

अखराहामे गरीबनक युद्ध ओहि बाघिनसँ भेल — साधारण कुश्तीक स्थान आब एकटा जीवन-मृत्युक संघर्षस्थल बनि गेल। गरीबन, जे कुश्तीमे निपुण छला, आब एकटा दैवी शक्तिसँ युक्त बाघिनक सोझाँ छला।

ई युद्ध असमान छल — मानव बल आ दैवी क्रोधसँ प्रेरित बाघिनक शक्तिक बीच। गरीबनक पहलमानीक कौशल एहि असाधारण विरोधीक सोझाँ अपर्याप्त साबित भेल।

चित्र 4

अन्ततः गरीबन मारल गेला — एकटा अनजान-सुनजानमे भेल भूलक एतेक भारी मूल्य! ई घटना गामक लोकक लेल दुख आ आश्चर्यक विषय बनल — एकटा निर्दोष व्यक्तिक एहन दुखद अन्त।

गरीबनक लहासकेँ कमला धारमे फेंकि देल गेलनि — देवीक क्रोधक अन्तिम परिणति, जतय भौतिक शरीर सेहो सम्मानपूर्वक दफन नहि भऽ सकल।

अध्याय ३ : धोबीक अनादर

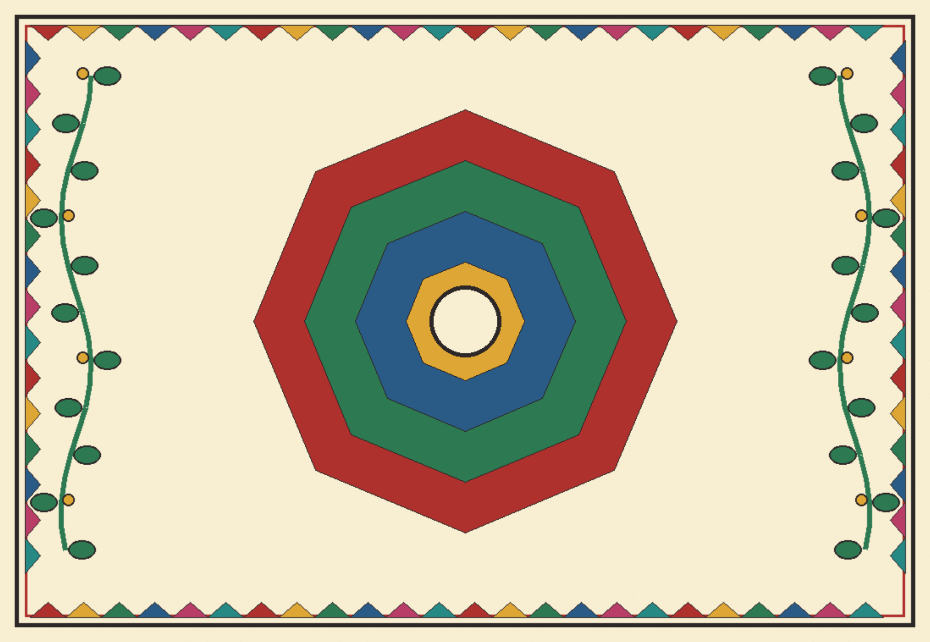

चित्र 5

गरीबनक लहास कमला धारमे बहैत एकटा धोबिया घाटपर पहुँचल, जतय एकटा धोबि कपड़ा साफ करैत छला। ई सामान्य दृश्य — दैनिक जीविकाक कार्य — अकस्मात् एकटा अप्रिय स्थितिमे बदलि गेल।

धोबिकेँ कपड़ा साफ करएमे दिक्कत भेलनि — लहासक उपस्थिति ओकर काजमे अड़चन बनि गेल। ई साधारण असुविधा, मुदा एकर प्रतिक्रिया गम्भीर परिणाम आनत।

चित्र 6

धोबि — बिनु ई सोचने जे ई कोनो सम्मानित व्यक्तिक शव अछि — लहासकेँ सहटारि कऽ दोसर दिस बहा देलनि! ई कार्य अनादरपूर्ण छल, भलहिं धोबिक कोनो दुर्भावना नहि छल, केवल अपन काजक असुविधा दूर करबाक स्वार्थ छल।

ई अनजान-सुनजानमे भेल दोसर भूल — पहिल भूल छल गरीबनक पएर पीड़ीमे लागब — आगाँ चलि कऽ एकटा नव परिणामक जन्मदाता बनत, जे धोबि समुदायकेँ प्रभावित करत।

अध्याय ४ : कनियाँक आर्तनाद

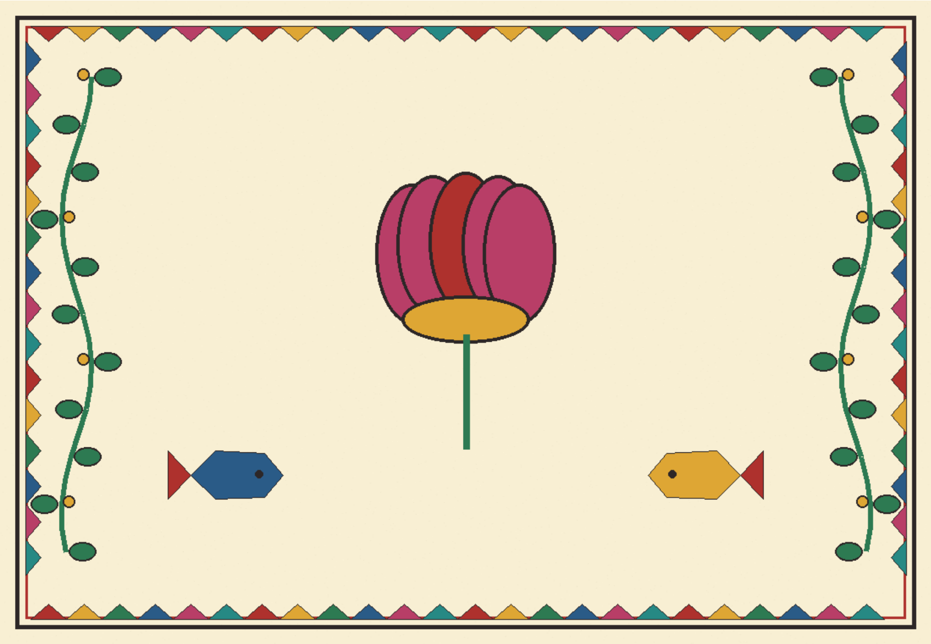

चित्र 7

एम्हर गरीबनक कनियाँ अपन पतिक मुइलाक समाचार सुनि दुखित मोने आर्तनाद करए लगलीह — पत्नीक असहनीय शोक, अपन जीवनसाथीक अकाल मृत्युपर।

शोकाकुल कनियाँ भगवानकेँ सुमिरलनि — गहींर श्रद्धा आ निराशाक बीच, एकमात्र सहारा। ई प्रार्थना ओकर अन्तिम आशा छल, अपन पतिक न्यायक लेल।

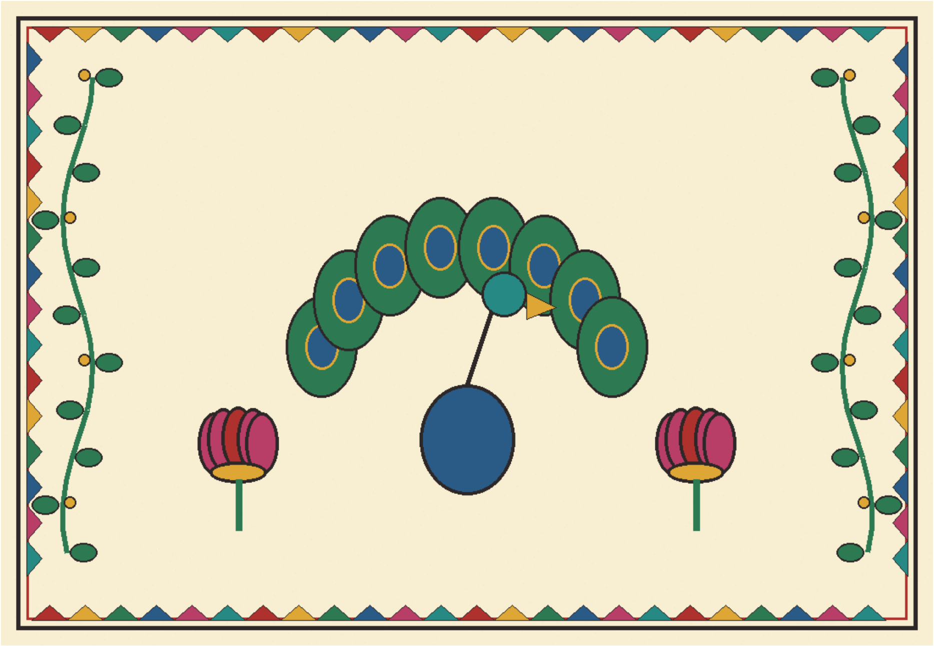

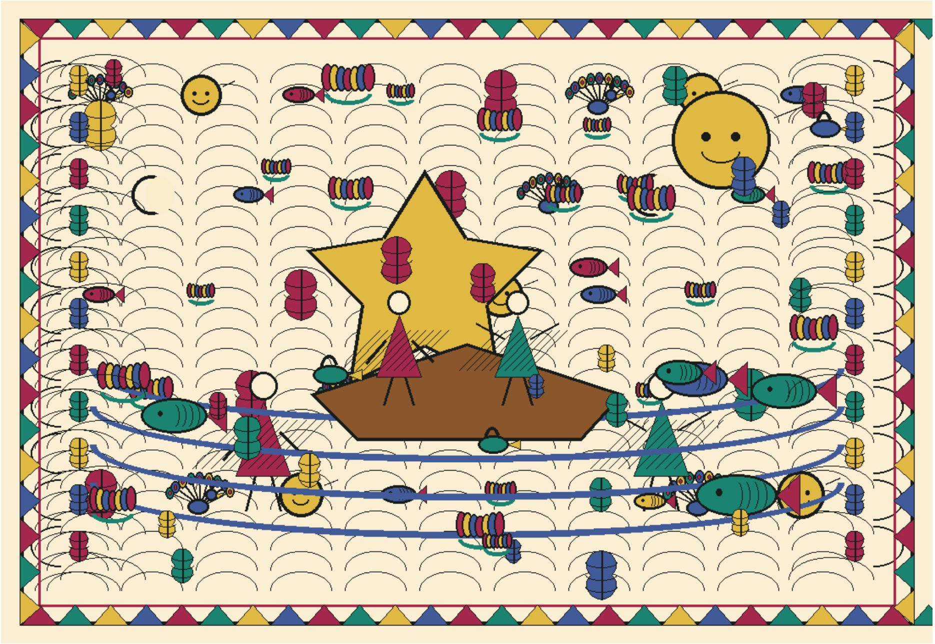

चित्र 8

आब भगवानक कृपासँ एकटा अद्भुत घटना भेल — गरीबनक आत्मा एक गोटेक शरीरमे पैसि गेल, आ ओ भगता -भक्तक शरीरमे देवात्माक प्रवेश- खेलाए लागल — मृत्युक बादो न्यायक लेल आत्माक पुनः सक्रिय होएब छल ई।

ई भगता-अवस्थामे गरीबनक आत्मा अपन कष्ट, अपन अनादर, आ अपन अन्यायपूर्ण मृत्युक कथा कहबाक अवसर पओलक — मृतात्माक स्वर, जीवितसभक बीच गूँजैत।

अध्याय ५ : स्राप आ चेतावनी

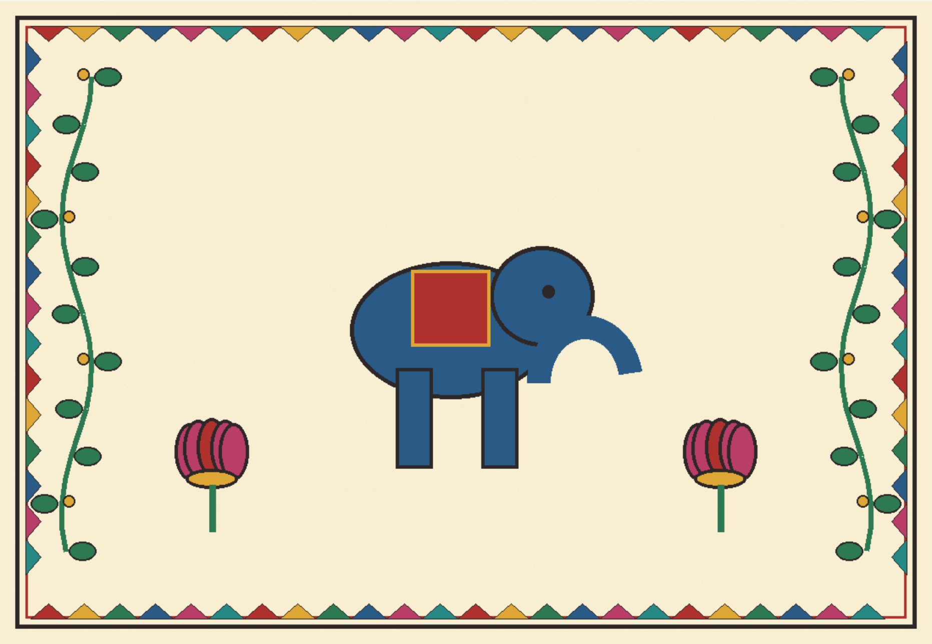

चित्र 9

भगता (गरीबनक आत्मायुक्त शरीर) कहलनि — 'एक गोटे धोबि हुनकर अपमान केलन्हि, से ओ शाप दैत छथिन्ह!' — मृत्युक बादो अपन अनादरक स्मृति, आ न्यायक माँग।

शापक विषयवस्तु स्पष्ट छल — 'सभ धोबि मिलि हुनकर लहाशकेँ कमला धारसँ निकालि कऽ दाह-संस्कार करथि, नहि त' धोबि सभक भट्ठीमे कपड़ा जरि जाएत!' — एकटा सामूहिक चेतावनी, सम्पूर्ण धोबि समुदायकेँ सम्बोधित।

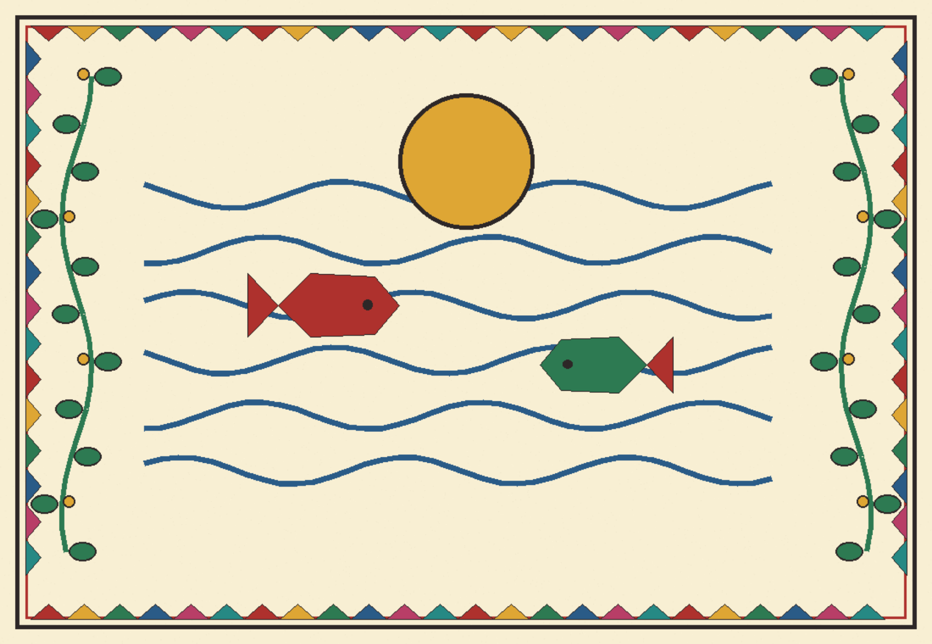

चित्र 10

ई शाप न्यायसंगत आ प्रतीकात्मक छल — जइ लहासकेँ अनादरपूर्वक बहाओल गेल छल, ओकर उचित दाह-संस्कार अनिवार्य छल; अन्यथा समस्त धोबि समुदायक जीविकाक साधन (कपड़ा धोअब आ सुखाएब) नष्ट भऽ जाएत।

ई शाप एकटा गम्भीर सन्देश छल — मृतकक प्रति अनादर, चाहे अनजान-सुनजानमे किएक नहि होअए, गम्भीर परिणाम आनि सकैत अछि। सम्मान आ उचित संस्कारक महत्व एहि शाप द्वारा रेखांकित भेल।

अध्याय ६ : सामूहिक प्रायश्चित्त

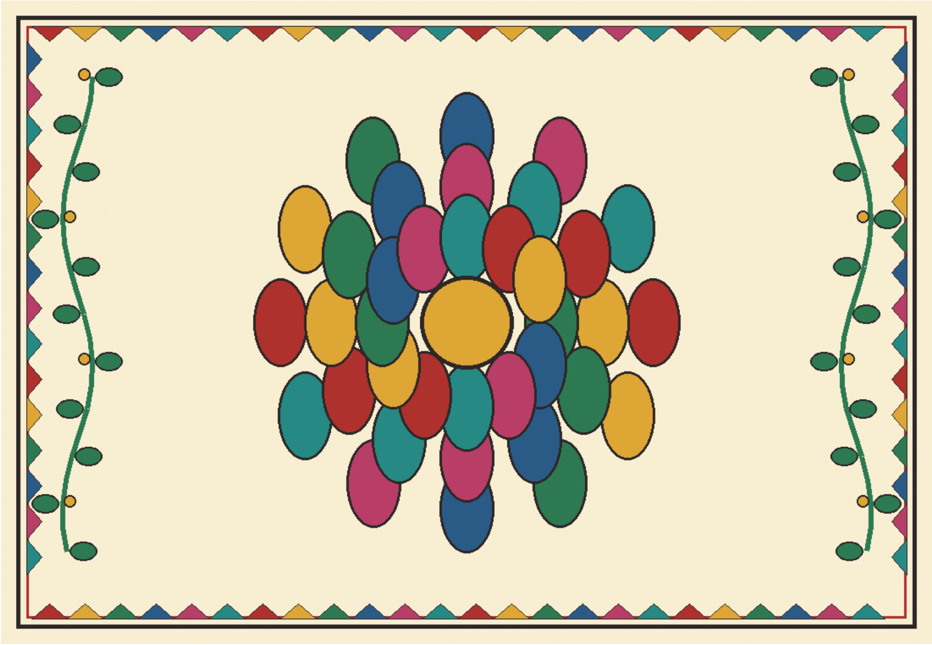

चित्र 11

सभ गोटे (धोबि समुदाय) ई शाप सुनि तुरत कार्रवाइ केलनि — भयक कारण, वा विवेकक कारण, ओ सभ धारमे कूदि गरीबनक लहासकेँ ताकए लगला।

सामूहिक प्रयाससँ लहास निकालल गेल, आ विधिवत् दाह-संस्कार कएल गेल — गरीबनकेँ अन्ततः ओ सम्मान भेटलनि, जकर ओ हकदार छला, भलहिं मृत्युक बाद।

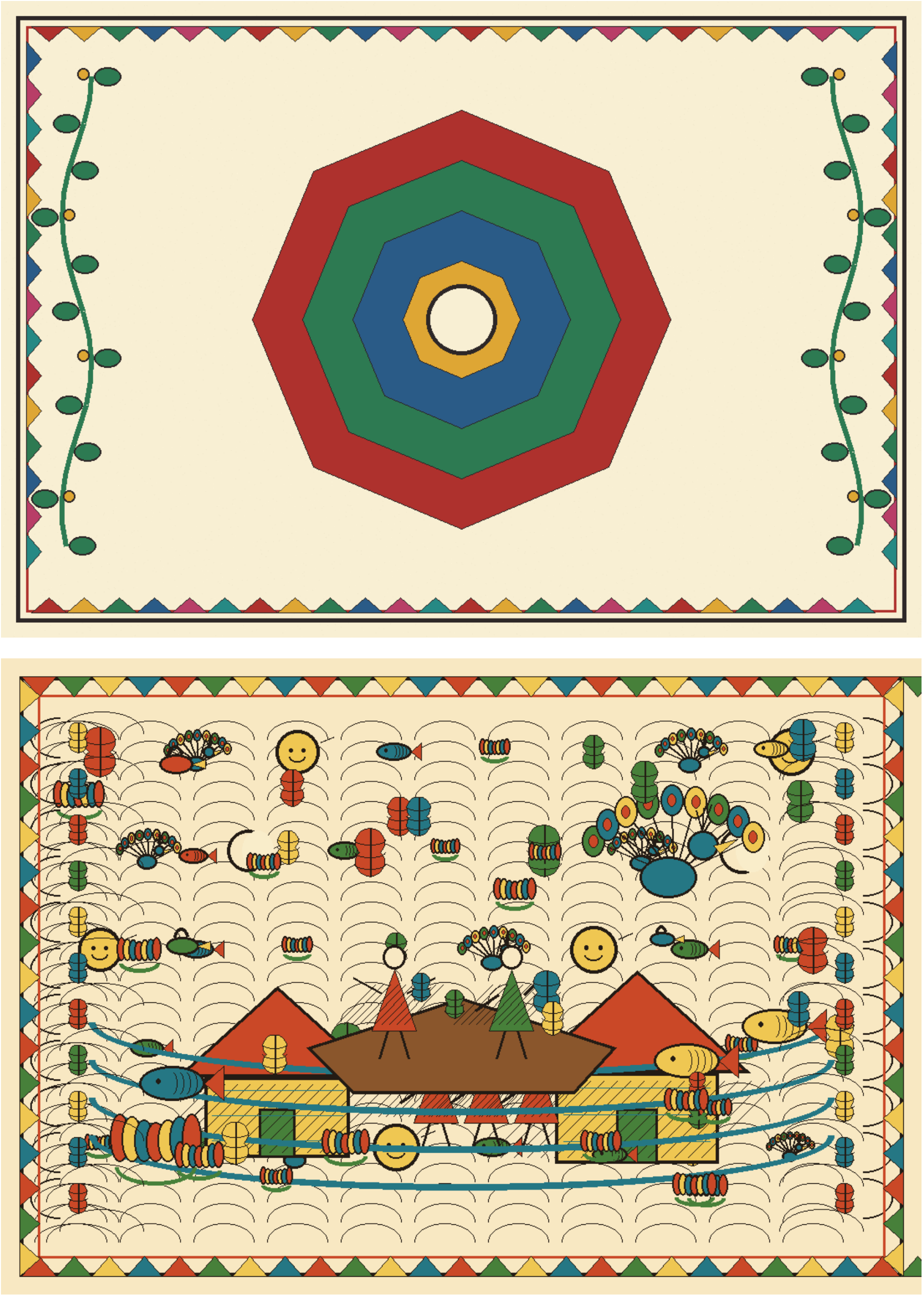

चित्र 12

ई सामूहिक प्रायश्चित्त धोबि समुदायक एकताक प्रतीक छल — एकटा भूलक सुधार, सामूहिक जिम्मेदारीक स्वीकृति, आ भविष्यक विपत्तिसँ बचेबाक प्रयास।

दाह-संस्कारक बाद शाप निष्प्रभावी भऽ गेल — धोबि समुदायक भट्ठी सुरक्षित रहल, आ गरीबनक आत्माकेँ शान्ति भेटलनि। न्याय आ सम्मान अन्ततः पुनर्स्थापित भेल।

अध्याय ७ : भट्टीक रक्षक

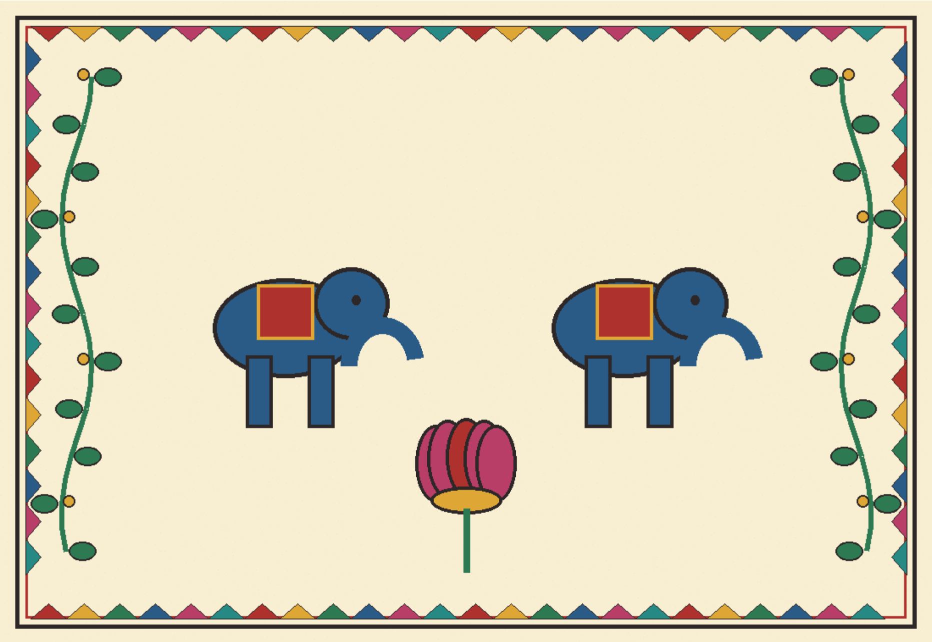

चित्र 13

तकर बादसँ गरीबन बाबा भट्ठीक कपड़ाक रक्षा करैत आएल छथि — एकटा साधारण, अनजान-सुनजानमे भेल भूलमे मारल गेल व्यक्ति, अन्ततः एकटा रक्षक देवताक रूपमे स्थापित भेला।

ई परिवर्तन असाधारण छल — गरीबन, जे अपने अन्यायपूर्ण मृत्युक शिकार भेला, से आब ओही धोबि समुदायक रक्षक बनि गेला, जकर एकटा सदस्यक भूलक कारण ओकर लहासक अनादर भेल छल।

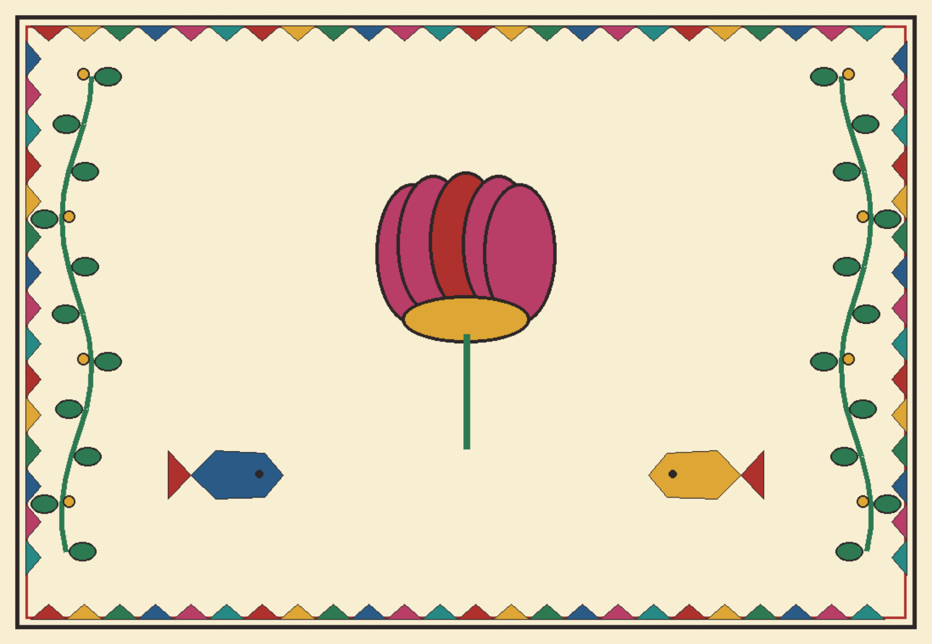

चित्र 14

ई गाथा क्षमा आ रूपान्तरणक गहींर सन्देश दैत अछि — अन्याय आ अनादरक बादो, सामूहिक प्रायश्चित्त आ सम्मानसँ सम्बन्ध पुनर्स्थापित भऽ सकैत अछि, आ पीड़ित स्वयं रक्षक बनि सकैत अछि।

आइयो धोबि समुदायमे गरीबन बाबाक स्मृति सुरक्षित अछि — भट्ठीक रक्षक, कपड़ाक सुरक्षाक देवता, एकटा एहन लोकदेवता, जकर कथा अनजान-सुनजानमे भेल भूल, देवीक कोप, अनादर, शाप, आ अन्ततः सामूहिक प्रायश्चित्त आ अमरताक सम्पूर्ण चक्रकेँ प्रदर्शित करैत अछि।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in